‘तवायफ, अभियंता और संगीतकार ः इंडियाकी प्रायमा डोना’

---

१६ जून २०१० . स्थल ः हॉल ऑफ हार्मनी, नेहरू सेंटर परिसर, वरली, मुंबई . संध्यासमय . प्रयोजन - पुस्तक प्रकाशनका . प्रमुख अतिथी ‘संतूर’ वादन सम्राट पं . शिवकुमार शर्माजी . बाहर तूफान और जमके धुवाँधार बारिश . ऊसीमे समारोह डूब जानेकी आशंका . आयोजक, प्रकाशक एवं लेखक भारी चिंतामे और ऊलझनमें व्यस्त . पुस्तक एक ‘तवायफ’ की जीवनीपर . लेखक महोदय बंगलोरके . तीस सालके नौजवान . पेशेसे अभियंता . अविवाहित . पीछले तीन सालोंसे इस ‘तवायफ’ की जीवनीमे पूरी तरह डूबे हुए . ये औरत एकसौ चालीस बरसकी . अल्लाको प्यारी होकर भी अस्सी साल हो चुके . केवल उसका ध्वनिमुद्रित स्वर हृदयमे काँटेकी तरह चुभ गया और ये उसका जीवनचरित्र लिखनेका संकल्प कर बैठे . काम कठीन था फिर भी पूरा कर लिया . दो महिनेके अंदर पहला संस्करण बिक गया और दूसरेकी तैयारी शुरू भी हो गई . दिल्लीमे उपराष्ट्रपतीजी, बंगलोरमे पं . जसराजजी, कोलकातामें विदुषी गिरीजादेवीजी और चेन्नईमे राज्यपालजीके हाथों विमोचन समारोह संपन्न हुआ . आज ऊसीकी लाडली बम्बई शहरमे शानदार समारोहका आयोजन . म्हैसूर स्टेट अर्काइव्हके दफ्तरमे उसीके लिखे खत देखते समय और कोलकातामे दोस्तके घर पुराने कोर्ट केसके कागज पढते वक्त अचानक काफी तेज हवाके कारन सबकुछ बिखर गया था . और आज उसके प्यारे महालक्ष्मी रेसकोर्सके पास मुसलाधार बारिश मानो इम्तेहान ले रही है . इस किताब का प्रकाशन समारोह ठीकसे ना हो ऐसा तो वो नही चाहती? ऐसे कुछ विचार लेखकके मनमे आने लगे . इतनेमे दूर गेटके पास एक बडीसी मर्सिडीज कार आ गयी . ऊसमेसे साक्षात वोही उतर गयी . साथमे जहाँ आखरी साँस ली थी, उसी म्हैसूरके नरेश वोडियारजी भी . जल्दीसे हॉलके बाहर खडे होकर दोनों बडे प्यारसे मेहमानोंका स्वागत करनेमे जुट गये . अचानक बारिशभी कम हो गई . धीरे

धीरे ऊसके सुरोंके चाहनेवाले आने लगे और देखते ही देखते वो छोटासा हॉल भर गया.प्रमुख अतिथीगण भी आ गये.लेखक महोदय भी मनही मन प्रसन्न हो गये.ऊपस्थित श्रोता समुदाय औसतसे पचास सालसै भी ज्यादा ऊम्रवाला.किसीने भी उसका नाच देखा नही था या अदाकारीका गाना सुना था.बुजुर्गोसे कहानियाँ तो बहोत सुनी थी.ऊसके गानोंकी ध्वनिमुद्रिकाएँ बजने लगी.तब सभी मेहमान अंदर आकर बैठने लगे.वो भी अंदर आकर आखरी लाइनमे बैठ गयी.हर गानेके अंतमे 'माय नेम इज गौहर जान' ऐसा जोरसे सुनाई दिया.वह सुनकर कई श्रोता मानो अपने बचपनमे जाके या जवानीके दिनोंकी सैर कर आए.म्हैसूर महाराजाका लिबास पहना हुवा युवक अब धीरे धीरे मंचकी तरफ चला गया और कार्यक्रमका संचालन करने लगा.'गौहर' यानीकी कीमती हिरा.गानेके बारेमे वो अपने जमानेकी मानो 'लता मंगेशकर' थी ऐसा ऊसने बताया.पुस्तकका नामभी हालहीमे प्रकाशित 'माय नेम इज खान' फिल्मसे मिलता है ये भी जोड दिया.ऊसके जीवनचरित्रकी खोजकी अदभुत एवं कष्टप्रद कहानी लेखकने विस्तारसे बतायी.फिर संतूरवादक मेहमानोंके हाथों पुस्तकका विधीवत प्रकाशन हुआ.संगीतकारजीने अपने भाषणमे 'तवायफ' और ऊसका सामाजिक स्थान इस विषयपर काफी अच्छा विश्लेषण किया.

"आज 'तवायफ' को कुछ मानसन्मान नही रहा.पुराने जमानेमे कई संगीतकार और कलाकारोंके साथ शादी करके या बगैर शादीकेभी ये औरतें रहतीं थी.बडे घरोंमे एक रसोईघर छोडकर सभी जगह उनको घूमने देते थे.घरके नन्हे मुन्ने और ऊभरते कलाकारोंको नाच गाना सिखाती थी, महफिलमे और जलसोंमे पेश आनेके तरीके तथा तमीज और तहजीबकी शिक्षा देती थी.ऊनमेसे सबसे जानी मानी और लोकप्रिय तवायफ थी 'गौहरजान'.पुराने पिक्चर पोस्टकार्डपर उसको इंडियाकी 'प्रायमा डोना'(ऑपेरामे 'एकल' यानिके सोलो गानेवाली प्रमुख गायिका)करके

संबोधित किया है.ऊसके जीवनपर 'पाकीजा' और 'उमराव जान' से भी बढकर बेहतरीन फिल्म बन सकती है.इतना कुछ सामान इस किताबमे है".ऊसका जीवन और चरित्रके बारेमे और वक्ताओंने भी भाषण दिये.ऊसके रिकार्डका सूर कानोंमे गूँज रहा था और ऊसी माहोलमे कार्य क्रम समाप्त हुआ.हॉलके बाहर पुस्तक खरीदकर 'गौहर' के साथ फोटो खिंचवानेके लिये लोग कतारमें खडे हुए.बाहर आकर कुछ अजीबसी भावना मनमे लिये मैं रास्तेपे आ गया.सोचने लगा.आज सौ सालके बादभी किसका गाना सुना जाता है? किस कलाकारका या कलावतीका जीवनचरित्र प्रकाशित होकर इतना अच्छा बिकता है? इन सवालोंका जवाब बहोत सोचनेपर भी नही मिला.

गौहर जान ः (१९२०)
'प्रायमा डोना ऑफ इंडिया'

बाएँसे ः कुशल गोपालका, विक्रम संपत, शिवकुमार शर्मा
सौ.गोपालका, राजश्री बिर्ला - १६ जून २०१०

सुरेश चांदवणकर, नेव्हीनगर, कुलाबा मुंबई
१८ जून २०१०.
chandvankar.suresh@gmail.com